शख़्सियत

अमेरिकी प्रतिनिधि बॉबी जिंदल

दोनों देशों के रिश्तों में नया उत्साह

बिल हैबर © ए.पी.-डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

लॉरिंडा कीज़ लौंग

चौदह साल बाद अपने माता-पिता की जन्मस्थली आने पर अमेरिकी प्रतिनिधि बॉबी जिंदल ने पाया कि इस बीच भारत में बहुत बदलाव आए हैं। वाहनों, इमारतों और निर्माणाधीन स्थलों की संख्या पहले से कहीं ज्यादा दिखलाई दी। सबसे बड़ा बदलाव दिखा लोगों की मनोवृत्ति और उनके लक्ष्यों में।

अमेरिकी कांग्रेस के एक प्रतिनिधिमंडल के साथ जनवरी में नई दिल्ली और राजस्थान के दौरे पर आए जिंदल ने स्पैन को बताया, ''अब आप भारतीय युवाओं और प्रोफेशनल लोगों से बात करते हैं तो उनमें से ज्यादा अपने सपनों को यहीं रहते हुए साकार करने की बात करते हैं। सॉफ्टवेयर इंजीनियर, व्यवसायी, निवेशक और अन्य भारतीयों के अमेरिका और अन्य देशों से लौटकर आने और यहीं रहने की बात ज्यादा सुनाई देती है। वर्ष 1992 में जब मैं भारत आया था, तब से अब तक लोगों की सोच में बदलाव आया है। उनकी अपेक्षाएं बदली हैं। अब लोगों में एक ऊर्जा दिखती है जो बहुत ही उत्साहजनक है।''

जिंदल मानते हैं कि अमेरिकियों और भारतीयों के बीच संबंधों में भी उत्साहजनक बदलाव आया है। राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू. बुश और अमेरिकी विदेश मंत्री कोंडोलीजा राइस अमेरिका-भारत संबंधों की बात नई शब्दावली में करते हैं। ''वे इन्हें मूल्यों पर आधारित (संबंध) बताते हैं जहां लोकतंत्र और सांस्कृतिक विविधता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता साझी है।'' जिंदल कहते हैं, ''इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि अमेरिका का राष्ट्रपति कौन है या भारत का प्रधानमंत्री कौन है, या अमेरिका में रिपब्लिकन या डेमोक्रेट सत्ता में हैं या फिर भारत में कांग्रेस या भाजपा। हमारे संबंध इन सबसे ऊपर हैं।''

पिछले तीस सालों में आए बदलावों के बारे में बातचीत करते हुए जिंदल ने ध्यान दिलाया कि तब ईरान और वेनेजुएला अमेरिका के घनिष्ठतम सहयोगी और ऊर्जा के सबसे विश्वस्त आपूर्तिकर्ता थे। पूर्वी यूरोप के देश सोवियत खेमे के अंग और अमेरिका के विरोधी थे। रणनीतिक और व्यावहारिक कारणों से अमेरिका ने नए गठबंधन किए हैं। वह मानते हैं कि भारत-अमेरिका संबंध अस्थायी जरूरतों पर नहीं बल्कि लोकतंत्र और मानवधिकारों के प्रति प्रतिबद्धता की ठोस नींव पर टिके हैं। ''आप अमेरिका के अन्य देशों से पीढ़ियों तक टिकाऊ गठबंधनों पर ध्यान दें तो पाएंगे कि वे साझा मूल्यों पर आधारित हैं। ब्रिटेन से दोस्ती इसका उदाहरण है। इसलिए अमेरिकी राष्ट्रपति और भारतीय प्रधानमंत्री को इस शब्दावली का प्रयोग करते देखना सुखद है... दोनों देशों में साझा मूल्यों के बारे में समझदारी बढ़ी है। अब वे एक दूसरे को शीतयुद्ध या दूसरे देशों के चश्मे से नहीं देखते।'' जिंदल ने कहा कि इन संबंधों को तराशने में राजनयिक और सरकारी पक्ष ही नहीं, व्यवसायी और अन्य लोग भी योगदान कर रहे हैं। ''इसलिए अगले दो सालों में ऊर्जा के क्षेत्र के अलावा व्यापार और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के मामलों में भी दोनों देशों के बीच जबर्दस्त ढंग से सहयोग बढ़ेगा। हमारे संबंध ऐसे हैं जहां हम कुछ मुद्दों पर असहमत भी होते हैं। भारत की ही तरह अमेरिका के कुछ अन्य सहयोगी भी हमारी इराक नीति से सहमत नहीं हैं लेकिन इससे उनसे संबंध खत्म नहीं हुए हैं। फिलहाल थोड़ी क्षति हो सकती है लेकिन सभी को दीर्घकालीन परिप्रेक्ष्य में इन संबंधों के फलने-फूलने की आशा है।''

जिंदल लुइसियाना के एक ऐसे क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसके झींगा उद्योग ने भारत, वियतनाम, थाइलैंड और अन्य देशों से आयातित झींगों पर एंटी-डंपिंग शुल्क लगवाने के लिए दबाव बनाया और सफलता पाई। पिछले साल नवंबर में अमेरिका स्थित अंतर्राष्ट्रीय व्यापार आयोग ने यह कहते हुए शुल्क का समर्थन किया कि इन देशों से आयात किए गए झींगे बाजार मूल्य से कम पर बेचे जा रहे थे जिससे अमेरिकी झींगा व्यवसायियों को नुकसान हो रहा था। भारतीय झींगा उत्पादकों का कहना है कि उत्पादन की लागत कम होने के कारण उनके झींगे वाकई सस्ते होते हैं, इसलिए उन पर शुल्क लगाना संरक्षणवादी कदम है। जिंदल कहते हैं, ''दोनों देशों के झींगा उत्पादकों और उद्योगों के लिए यह आश्वस्ति जरूरी है कि न्यायपूर्ण और निष्पक्ष प्रक्रिया से आपसी संवाद के जरिए मसले सुलझा लिए जाएंगे और व्यापारिक युद्ध जैसी नौबत नहीं आएगी।'' वह इस विवाद को दोनों देशों के संबंधों में बढ़ती समझदारी का संकेत मानते हैं। वह कहते हैं, ''इसके (विवाद) बावजूद व्यापक संबंधों पर ग्रहण नहीं लगा। भारत के साथ ऐसे विवाद होते रहते हैं। लेकिन आयातित गोमांस पर जापान से और शैंपेन की लेबलिंग पर फ्रांस से भी विवाद होता है। किसी भी सामान्य संबंध में ऐसी चुनौतियां होती ही हैं। अमेरिका और भारतीय लोग खुद को लोकतंत्र और स्वतंत्रता को बढ़ावा देने, मानवाधिकारों के प्रति सम्मान और खुली बाजार आधारित अर्थव्यवस्था के प्रसार के संघर्ष में भागीदार पाते हैं।'' जिंदल कहते हैं, ''ये लगभग अपरिहार्य संबंध हैं, पूरी तरह साझे मूल्यों पर आधारित।'' □